Impact Factor 4.574

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Journal

VOL-V ISSUE-VIII Aug. 2018

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

असगर वजाहत लिखित इन्ना की आवाज नाटक में चित्रित सत्तापक्ष और विपक्ष

प्रा. तानाजी विठ्ठलराव भोसले
(शोधछात्र)
हिंदी विभाग, स्वा.रा.ति.म.वि.नांदेड

हिंदी साहित्य की प्रमुख विधाओं में नाटक विधा का आपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है । हिंदी नाटक मनोरंजन के साथ – साथ सामाजिक आदर्श सत्तापक्ष का कर्तव्य, आम जनता के प्रति शासक का उत्तरदायित्व, मानवीय जीवन की वास्तविकता का चित्रण है । सामाजिक पक्ष के धरोहर को आपने नाटको में चित्रित करने का प्रयास विख्यात नाटककार असग़र वजाहतजीने किया है । उनके लगभग 8 से अधिक नाटको में 'इन्ना की आवाज' यह एशिया की एक लोककथा पर आधारित है । जनमानस की कथा के माध्यमसे इसका विस्तार किया गया है । जीसमे आज के जनतंत्र के राजा याने शासक और पहले शासको के सत्ता प्राप्त करना, उसे अपनेही पास रखने की राजकीय महत्वकांक्षा सही या गलत को दर्शाया गया है ।

इन्ना की आवाज नाटक के प्रमुख पात्र सुल्तान और इन्ना है, सुल्तान के माध्यमसे आज की ओछी राजनिति को दर्शाया गया है, सत्ता प्राप्त करने के लिए अलग – अलग हथकडों का उपयोग करना आम जनता के प्रति उदासिनता, आत्मीयता का आभाव, जूलमी शासकवृत्ती, प्रजा को आपना गुलाम समझना साथ ही सत्ता को चुनौती देनेवाली ताकतों को सत्ता का अंग बनाकर उन्हे सामर्थ्यहिन बना देना इस वर्ग का यह प्रतिनिधीक पात्र है। जो जनता की आवाज, आम आदमी की पीडा, उनका दर्द, आम आदमी की छटपटाहट को उजागर करता है ।

इस नाटक की कथावस्तु भले ही एशिया की एक लोककथा पर आधारित है परंतु आज वह आधुनिक शासको की मनोवृत्ति को दर्शाने का प्रयास करती है । इन्ना की तरह आज भी आम लोक पीडित, उत्पीडित है । इन्ना को समरकंद के बाजार से गुलाम के रुप में खरिदा गया था, वह एक इमानदार, कर्तव्यनिष्ठ खुद काम खुद करने वाला, राजा के प्रति वफादार वतन एवं मातृभूमिके लिए सर्वस्व न्योछावर करनेवाला समाज के प्रति आदारातिथ्य रखनेवाला बडा ही संयमी व्यक्तित्व होकर उभरता है । वह आला खानदान में पैदा नही हुआ, कहि मदरसे में तालिम हासिल नही हुई, उसकी जींदगी पुरी अजाबो में गुजरी उसकी मॉ एक नेकदिल और मासुम औरत थी, उसके बचपन में उसके बाप मॉ को बेरहमीसे पिटता देखकर उसके शरिर पर रोंगटे खडे हो जाथे थे, रहजनो ने मॉ को बुरी तरहसे नेजे की नोंकसे उसके ऑखों के सामने मार दिया था, खुन में चिथडी मॉ बुरी तरह से कराह रही थी और निर्दयी बेहरम रहजनाने हॅस हॅस कर उसपर थुकते थे । अखीर में उन्होने इन्ना को पकडकर गुलाम बना दिया और अपने साथ ले जा कर समरकंद के बजार में सुल्तान के बेचा ।

भयानक परिस्थिती में पलने के बावजुद भी उसके मन में किसी के प्रति द्वेष नही होना यह एक आदर्शवत मानव की विशेषता है । वह 'चरवाहो का गीत' गाने से जन मानस में बहुत विख्यात होता है । सबी लोग उसे चाहने लगते है, इन्ना का यह एक सत्ता विपक्ष के रुप में देखा गया है । आज विपक्ष को समाज के प्रति, जरुरत मंद के प्रति आपना कर्तव्य पुरा करना

चाहिए यह संकेत इस नाटक से मिलता है । इस नाटक की मुल संवेदना आज के जनतंत्र में विपक्ष की भुमिका की ओर निर्देश करती है जो इन्ना के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है ।

इस नाटक का प्रमुख पात्र 'सुल्तान' जो सत्त का महत्वाकांक्षी होते हुए सत्ता के विकेंद्रीकरण के बजाय केंद्रीकरण सत्ता अपनी हाथो में रखना चहाता है । राजा के हमेशा 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय एवंम प्रजाहितैषी' होना चाहिए, इस संवेदन को चित्रित किया है । वाम की प्राथमिक समस्याओं से कुछ लेना देना दही है, अवाम को अपना गुलाम समजता है । उसे बीस बरस से बनवाये जाय रहे भव्य भवन पर खुद का नाम बडे बडे अक्षरो में, सुस्पष्ट, आकर्षक रुप में चाहता है, लेकिन बार बार बुढीया का नाम भव्य भवनपर आने के खातीर वह बाह्योडंबर दिखाता है और वह भव्य महल बुढीया के नाम करता है ।

नाटक की मुल कथावस्तु इन्ना और सुल्तान के माध्यमसे आज सत्तापक्ष एवं विपक्ष के उत्तरदायत्वि की ओर निर्देश करती है । सत्तापक्ष को कमजोर करने के लिए नई नई चाले चलता है, जिस में इन्ना की बढती ख्याती देख जनमानस के बढती प्रतिष्ठा के कारण उसे वजीरे आजम बनाने की, शक्ल लढी जाही है । सुल्तान कहता है ''हुकूमत चलेगी तो जो ख्वाहिशे है उसे पा सकोगे'' अपनी कर्तव्यनिष्ठा के कारण न चाहते हुए भी उसे वजीरे आजम बनना पडता है ।

वजीरे आजम बनने पर उसकी प्रतिमा मलीन की जाती है, कौम मे उसकी महत्व को कम किया जाता है, सत्तापक्ष विपक्ष को दबाने के लिए किस हद तक जाता है यह नर्तकी की संवाद ''सुल्तान कौनसी भी हद तक जा सकता है'' आखिर में इन्ना का महत्व, प्रतिष्ठा, इज्ज को आम जनता के सामने ठेंच पोहचाइ जाती है और उसे जनमानस की नजरो में गिराने की कोशिश होती है ।

इसी तहर आज की समय में 'इन्ना की आवाज' यह नाटक बड़ा प्रासंगिक लगता है। आज के शासक सत्तापक्ष एवं विरोधी पक्ष के कर्तव्य, उत्तरदायत्वि के ओर संकेत करता है। भले ही यह एशिया की लोककथा पर आधारित होने के बावजूद वर्तमान राजनीति को प्रेरणा देने वाली, आम जनता के प्रति शासक का कर्तव्य और राष्ट्र विकास में दोनों की भूमिका की ओर संकेत करनेवाली एक प्रमुख कला कृती की दृष्टी से इन्न की आवाज इस नाटक की और देखा जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अजग़र वजाहत के नाटक, साहित्य उपक्रम नई दिल्ली.
2. इन्ना की आवाज, अजग़र वजाहत, वाणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली.